श्री

# आनंद कल्याण

वि.सं. २०७५ - कार्तिक शुक्ला- १५ • दि. २३, नवम्बर, २०१८ • अंक-९

9

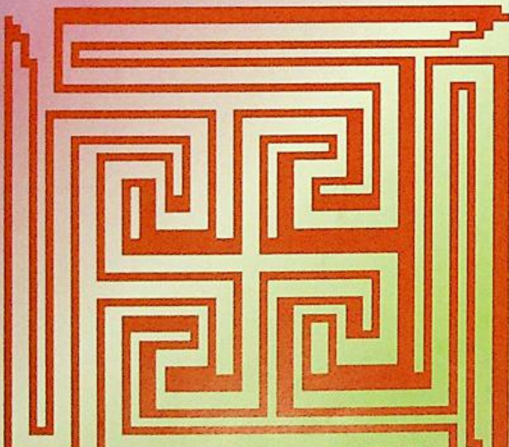

शेठ आणंदजी कल्याणजी

"सबको आनंद सबका कल्याण"

अहमदाबाद.

श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति

# श्री आदिनाथ दादा की ५००वीं सालगिरह

के उपलक्ष में

## ५००वीं सालगिरह का प्रसंग

संवत २०८७ वैशाख वद-६. सोमवार दिनांक १२-०५-२०३१

## शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी

## द्वारा प्रस्तुत लाभ लेने का सुवर्ण अवसर.....

### "सुवर्ण महोत्सव प्रसंग आयोजित सर्व साधारण फंड"

*१५ साल बाद आनेवाले*

*सुवर्ण महोत्सव में हमारा लाभ क्यों न हो ?*

**बस ! आज से सिर्फ १ रुपया प्रति दिन द**

**१ साल के रु. ३६०, १५ साल के रु.५४००.**

*शेठ आणंदजी कल्याणजी के नाम का एकाउन्ट पेयी चैक / नकद भारत की एच.डी.एफ.सी. बैंक की किसी भी शाखा में सेविंग्स एकाउन्ट नं. 50100165224400 में जमा किया जा सकेगा। चैक जमा कराने के बाद पे-इन-स्लीप ट्रस्ट के अहमदाबाद के पते पर अपना नाम, पता, मोबाईल नंबर, ई-मेईल सहित फोर्म भरके भेज कर दान की रसीद अवश्य प्राप्त करे।*

*इस हेतु फोर्म शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट संचालित सभी तीर्थों में उपलब्ध है। इस के अलावा www.anandjikalyanjipedhi.org वेबसाईट पर से भी फोर्म डाउनलोड कर सकेंगे।*

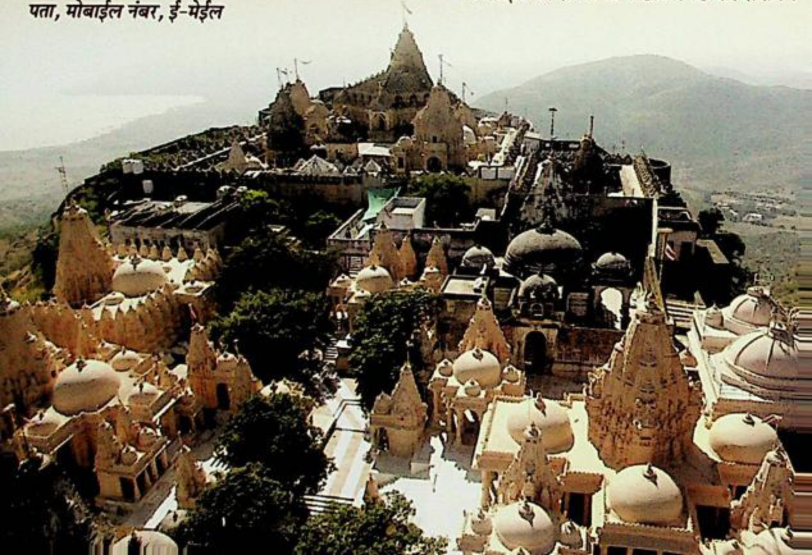

# "श्री आनंद कल्याण" ( त्रिमासिक पत्र )

(धार्मिक धर्मादा ट्रस्ट रजि नं. ए-१२९९/अहमदाबाद)

अंक : ९ कींमत : ₹ २० वार्षिक शुल्क : ₹ १००

## इष्ट सुख को हस्तगत करने के उपाय

कृत्वाऽर्हत्पदपूजनं यतिजनं
नत्वा विदित्वाऽऽगमं
हित्वा संगमधर्मकर्मठधियां
पात्रेषु दत्त्वा धनम्।
गत्वा पद्धतिमुत्तमक्रमजुषां
जित्वाऽन्तरारिव्रजं,
स्मृत्वा पञ्चनमस्क्रियां कुरु कर-
क्रोडस्थमिष्टं सुखम्॥ २२॥

अरिहंत परमात्मा के चरण का पूजन कर के
साधु पुरुषों को नमस्कार के
आगम का ज्ञान प्राप्त कर के
अधर्मी आत्माओं का संसर्ग छोड़ के
पात्र (योग्य) को धन का दान देकर
उत्तम पुरुषों के पदचिन्हों पर चल कर
काम - क्रोध आदि आंतर शत्रुओं को जीतकर
और पंचपरमेष्ठि भगवंतों का स्मरण कर के
ओ महानुभाव ! तू इष्ट वैसे मोक्ष सुख को हस्तगत कर लें।

: प्रकाशक :

शेठ आणंदजी कल्याणजी

'सबको आनंद सबका कल्याण'

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,

२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ००७.

# श्री आनंद कल्याण ( त्रैमासिक पत्र )

अंक : ९

प्रकाशन

वि.सं. २०७५, कार्तिक शुक्ला -१५ • ता. : २३-११-२०१८, शुक्रवार

प्रकाशक

हर्षदभाई महेता ( जनरल मेनेजर )

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,

२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड़, पालडी, अहमदाबाद-३८०००७

दूरभाष : 26644502 – 26645430

E–mail : shree_sangh@yahoo.com / info@anandjikalyanjipedhi.com

मुद्रक : नवनीत प्रिन्टर्स ( निकुंज शाह ) मोबाईल : 9825261177


## सकल संघ से निवेदन

शाश्वत गिरिराज शत्रुंजय महातीर्थ में पालीताणा जशकुंवर गांव पेढी में श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ जिनालय का आमूलचूल जिर्णोद्धार का काम पूरा हो चुका है। जिनालय में मूलनायक श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवंत एवम् अन्य ८ जिनबिंबों और अधिष्ठायक श्री पार्श्वयक्ष एवम् अधिष्टायिका पद्मावती देवी की मूर्ति प्रतिष्ठा सम्बन्धी बोलियां वि.सं. २०७५, कार्तिक वद ८, शुक्रवार, दि. ३०-११-२०१८ के दिन मंगल मुहूर्त में पालीताणा, पारणा घर में रखी गई है। सभी को पधारने एवम् भावपूर्वक बोली में जुड़ने की बिनती है।

बोली के बारे में अंतिम निर्णय ट्रस्ट मंडल का अबाधित रहेगा।

**नोंध :** वि.सं. २०७५, महा सुद ५, रविवार, दि. १०-२-२०१९ के दिन मंगल मुहूर्त में प्रतिमाजीओं का प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया जायेगा।

**सम्पर्क सूत्र :** दिलीप पंचाल - ९४२८० ००६०३, कौशल शाह - ९४२८०००६०६

**शेठ आणंदजी कल्याणजी**

'सबको आनंद सबका कल्याण'

# श्रीशत्रुंजय गिरिराज - पालीताणा

भारत के पश्चिमी राज्य गुजरात के सोरठ (सौराष्ट्र-सुराष्ट्र) नाम से प्रसिद्ध विस्तार के आग्नेयकोण में स्थित शत्रुंजयगिरि का स्थान जैन तीर्थों की श्रेणि में शीश मुकुट सदृश है। प्राचीन आगमों में सिद्धक्षेत्र के रुप में संज्ञापित और समग्र जनमानस में शाश्वतगिरि के नाम से सुप्रसिद्ध इस तीर्थ की यात्रा प्रत्येक जैन धर्मावलंबी के जीवन का अमूल्य स्वप्न है। जीवन का परम ध्येय है।

## पालीताणा

गुजरात राज्य के भावनगर जिले में स्थित पालीताणा समुद्र-स्तर से ६६ मीटर अर्थात् २१७ फूट उंचाई पर १३ स्कवेर किलोमिटर में फैला हुआ रमणीय नगर है । ईस्वीसन् २०११ की जनसंख्या गणना के अनुसार इस नगर की जनसंख्या १.७६ लाख है। जिसमें ५२ प्रतिशत पुरुष तथा ४८ प्रतिशत महिलाएँ हैं। १५ प्रतिशत आबादी ६ वर्ष से नीचे की आयु के बालकों की है। साक्षरता के आकलन अनुसार ५९ प्रतिशत पुरुष और ५७ प्रतिशत महिलाए साक्षर हैं । अहमदाबाद से २२५ और भावनगर से दक्षिण-पश्चिम में ५१ किलोमिटर दूर स्थित पालीताणा नगर का प्राणस्वरुप यह गगनचुंबी शत्रुंजय पहाड है। पालीताणा रेल्वे स्टेशन और बस स्टेन्ड से अनुमानित २ किलोमिटर जितना लम्बा रास्ता जिसके दोनों ओर गांव बसा हुआ है व भांति भांति की वस्तुओं से भरा हुआ बाजार विकसित हुआ है। एक से बढकर एक सुविधाओं से पूर्ण १३० जितनी धर्मशालाओं की श्रृंखला फैली हुई है। इस दो किलोमिटर के मार्ग को पार करने पर आती है शत्रुंजय पर्वत की तलहटी !!!

## प्राचीन तलहटी तथा जय तलहटी

तलहटी अर्थात् किसी भी पर्वत पर चढने से का प्रारंभ जहां से होता हो फिर वहां चढने हेतु चाहे व्यवस्थित सीढियां हों या उबड खाबड पथरीले पत्थर हों ऐसी भूमि तलहटी कहलाती है। कहीं कहीं इसे पगडंडी अथवा पदतल भी कहते हैं। पदतल अर्थात् निश्चित रुप से निर्मित चलने का मार्ग ! जैसे की घेटी गांव से गिरिराज पर उपर चढने के मार्ग के प्रारंभ स्थान को घेटी पाग कहा जाता है। वैसे तो पहले इसे भी तलहटी कहते थे। पूर्व समय में पहली तलहटी 'वडनगर'थी।

फिर दूसरी तलहटी वल्लभीपुर - वडा के नाम से प्रसिद्ध हुई उसके बाद समय के प्रवाह में बहते हुए यह तलहटी आदपुर से प्रारंभ हो गई, चौथी तलहटी पालीताणा की बनी और पांचवीं तलहटी अर्थात् वर्तमान की जय तलहटी जो संप्रति प्रचलित है। रणसी देवराज की धर्मशाला के समीप में एक कमरा है, उसमें देहरी और आदीश्वर भगवान के पदचिह्न हैं उसे भी प्राचीन तलहटी कहते हैं। फिर कंकुबाई की धर्मशाला के पास में पुरानी विजय तलहटी का चबूतरा बताया जाता है। उसके उपर श्री आदीश्वर भगवान, श्री गौतमस्वामी और मणिविजयजी महाराज के पदचिह्न हैं, उसे भी पुरानी तलहटी कहते हैं। इस प्रकार तलहटी के विषय में समय समय पर भिन्न भिन्न परंपराए और मान्यताए अस्तित्व में आती रही हैं। वर्तमान में गत १००-२०० वर्षों से या इससे भी अधिक समय पहले से पालीताणा में शत्रुंजय गिरिराज पर चढने का मार्ग एकमात्र जय तलहटी के रुप में निश्चित होने से यह भाग अति प्रसिद्ध हुआ है। समय समय पर दर्शनार्थी यात्रियों के लियें उनकी आराधना पूजा पाठ आदि के साधन सुविधा और व्यवस्था को ध्यान में रखकर पेढी की ओर से साधन सुविधाओं को और अधिक सुव्यवस्थित किया गया है। कई वर्षो पहले जयतलहटी का मार्ग खुला हुआ था। उसके दाहिनी और अहमदाबाद के नगरशेठ श्री हेमाभाई वखतचंद ने आरस पत्थर की देहरीयुक्त मंडप बनवाया था। जबकि इसके बायीं ओर धोलेरावाले शेठ वीरचंद भाईचंद ने आसर के पत्थर से देहरीयुक्त मंडप बनवाया था। तलहटी का बडा चोक अब मंडप - बंदनवार(तोरण), स्तंभो और स्थापिकाओं (कमानों) से सुशोभित होने के कारण अति भव्य लगता है। कुछ ही सोपान चढने पर होल में प्रवेश करने पर सामने ही कुल ११ देहरियों की स्थापना है। चबूतरे पर बनी हुई सभी देहरियां पुरानी और जीर्ण हो जाने के कारण वि.सं. २०३४ में आणंदजी कल्याणजी पेढी ने उनका जीर्णोद्धार करवाकर सुंदर, सुशोभित देहरियों के रुप में निर्मित करवाकर उनकी पुनःप्रतिष्ठा करवायी।

प्रत्येक देहरी में भगवान ऋषभदेव तथा अन्य तीर्थंकरों की चरण पादुकाएँ है। ध्वजदंड तथा उनके उपर लहराती छोटी छोटी ध्वजाओं से सुशोभित (सिद्धशिला) मध्य की देहरी का शिखर बडा और कलात्मक बनाया है। देहरियों

के आगे के भाग में गिरिराज के पाषाण - शिलाओं का भाग भी खुला रखा गया है यात्रीयों द्वारा उनकी भक्तिभाव से पूजा होती है वंदना की जाती है तथा श्रृंगार होता है। यात्रा के प्रारंभ में यहां स्तुति तथा चैत्यवंदन करना अति शुभ माना जाता है। प्रात:काल से ही बडी भारी संख्या में शत्रुंजय के जयघोष को सुनकर आए हुए पूज्य साधु-साध्वी महाराजों का भावपूर्ण होकर दर्शन वंदन करते हुए, यात्री भाई-बहनों को चावल के स्वस्तिक बनाते हुए और शब्दों के तेल से के द्वारा स्वर के दिये प्रज्वलित करते हुए प्रभु का गुणगान करते हुए देखना एक आल्हादक द्रश्य है। भावपूर्ण भक्ति -वंदना करके पर्वत पर बिराजमान दादा 'आदिनाथ' के दर्शन करने हेतु जाते हुए 'जय आदिनाथ', 'जय दादा', 'जय शत्रुंजय', 'जय सिद्धिगिरि', जैसे हर्षोल्लास से भरे उद्धेष के साथ यात्रीगण तलहटी से आरंभ होने वाले सोपानों पर कदम रखते हैं और इस प्रकार शाश्वतगिरि की यात्रा प्रारंभ होती है।

## बाबू का देरासर ( मंदिर )

तलहटी के उपर धनवसही की टूक के नाम से प्रसिद्ध जिनालय मुर्शिदाबाद के निवासी राय धनपतसिंहजी तथा लखपतसिंहजी बाबू नाम के दो भाईयों ने अपनी माता महेताबकुंवर के श्रेय निमित्त बनवाया था, जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. १९५० में महा सुदि दशमी तिथि के दिन की गई थी। इस देहरासर में दादा आदीश्वरजी, पुंडरीकस्वामी की प्रतिमा तथा रायण पदचिह्न, जलमंदिर आदि की स्थापना की गई है। यात्रीगण इनके दर्शन कर आगे बढते हैं। पर्वत पर चढने में असमर्थ लोग इस टूक की यात्रा करके भी अपना अहोभाग्य व्यक्त करते हैं। आस पास की अन्य देवकुलिकाओं में जिन प्रतिमाओं तथा जिन पादुकाओं की स्थापना की गई हैं। धनवसी की टूक तथा तलहटी की देहरियों के बीच में नलिया कच्छ निवासी गोविंदजी जेवत हिरजी खोना द्वारा निर्मित १५ वें तीर्थंकर धर्मनाथ भगवान का जिनालय भी स्थित है। उपर चढने पर दाहिनी और पूज्य पन्यासजी कल्याणविमलजी के उपदेश से निर्मित सरस्वती गुफा के नाम से सुविख्यात साधना भूमि भी यहीं पर स्थित है। जहां मां सरस्वती की मनोहर प्रतिमा है। यहां उनके साधक श्रुतदेवी की उपासना करते हैं। इसके समीप में ही निर्मित १०८ समवसरण जिनालय की विशाल रचना सबके हृदय को भक्तिभाव से ओतप्रोत

कर देती है। इसमें १०८ चित्रपट्टों का आलेखन किया गया है। साधु-साध्वीजी श्रावक-श्राविका रुप चतुर्विध संघ के ४ अंगों के २७-२७ प्रसंगो के आलेखन युक्त १०८ चित्रपट बने हुए हैं। इस जिनालय का निर्माण वि.सं. २०२४ में किया गया था।

गिरिराज के जिनालय नगर में प्रवेश करने हेतु वर्तमान में मुख्य जय तलहटी का है। इस जय तलहटी के मार्ग में ३७४५ पायदान हैं। यह भूमितल से १८० फीट उंची है। कल्पनातीत बात है कि इतनी उंचाई पर ये अनेक प्रकार के अद्भूत देहरासर किन-किन भाग्यशालियों ने बनाये होंगे और कितना परिश्रम किया होगा।

इस आराध्य गिरिराज के प्रति सभी के मन में अहोभाव उत्पन्न होता है और अपने उस अहोभाव को प्रदर्शित करने हेतु लोग इस गिरिराज पर मनोहर मंदिर बनाते हैं प्रतिमाए प्रतिष्ठित करते हैं। ऐसे जिनालय के नगररुप गिरिराज की चोटी पर पहुंचने पर प्रथम प्रवेशद्वार रामपोल आता है। यह द्वार मनोहर और सुशोभित है। यहां सदैव चौकीदार रहते हैं। प्रातःकाल में द्वार खुलता है और संध्या को बंद होता है। रामपोल यह नाम किस कारण पडा, यह ज्ञात नहीं हो पाया है।

रामपोल में प्रवेश करने पर सन्मुख पंचशिखरी श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर आता है। यह मंदिर औरंगाबाद के निवाशी शेठ मोहनलाल वल्लभदास ने बनवाया है। इसी की बगल में सूरत निवाशी शेठ देवचंद कल्याणचंद के द्वारा बनवाया गया तीन शिखरों वाला मंदिर है। उसमें मूलनायक श्री सुमतिनाथ भगवान हैं। मोतीशाह शेठ की टूक से पहले इन मंदिरों का निर्माण हुआ है। जिससे यह कहा जा सकता है कि कुंतासार की जो खाई थी उस के किनारे पर ये दोनों मंदिर बनवाये गए होंगे उसके बाद बगीचा और मोतीशाह की टूक आती है। आगे जाने का रास्ता है। मोतीशाह शेठ की टूक से लगकर एक कुंड है। उस कुंड पर मोतीशाह की टूक की दीवार से लगकर कुंतासार देवी का गोखला है। रामपोल के अंदर जो चौक है, वहां डोलीवाले इत्यादि लोग बैठते हैं, आराम करते हैं।

## सगालपोल

वहां से कुछ सीढियां चढने पर सगालपोल का द्वार आता है। द्वार के बायीं ओर गेस्टहाउस है। सगालपोल का द्वारा जीर्ण होने पर उसे पुनःनिर्मित करवाया गया है। द्वार के अंदर यात्रीगण पूजा के साधनों के अलावा अतिरिक्त सामान रखा जाता है। यहां हंमेशा चोकीदार रहता है। अंदर आने पर नोंघणकुंड आता है।

मार्ग की एक और कार्यालय है। गिरिराज पर व्यवस्था आदि के लिये उत्तरदायी मेनेजर यहां बैठते हैं एवं यहां पेढी का कार्यालय भी है। दूसरी और केशवजी नायक की टूक आती है। उसका दूसरा द्वार वाघणपोल में आता है। ओफिस की बगल में पूजारी आदि लोगों के रहने के स्थानरुप कमरे बने हुए हैं। जो दोलाखाडी के नाम से जाने जाते हैं।

## वाघणपोल

कुछ पायदान उपर चढने पर वाघणपोल का द्वार आता है। उसके तरफ रक्षक का पूतला आता है। बाघ के बगल में हनुमानजी की मूर्तियुक्त छोटा मंदिर है।

## व्याघ्र पतोली

खुदाई कार्य करने पर वि.सं. १२८८ का वस्तुपाल तेजपाल का जो को पत्थर का शिलालेख निकला था, उसे वाघणपोल के द्वार की दीवार पर लगाया गया है। वाघणपोल का द्वार पुनःनवीन बनवाया गया है।

वाघणपोल से अंदर प्रवेश करने पर मंदिरों का विशाल समूह दृष्टिगोचर होता है। ये सभी टूक आज विमलवसही के नाम से जानी जाती हैं वाघेलाओं के युग में वाघणपोल की दाहिनी ओर जहा केशवजी नायक का आधुनिक मंदिर है, वहां रैवताचलावतार रुप नेमिनाथ भगवान का मंदिर शोभित होता था और इस समय बायीं ओर आज जहां दमणवाले शेठ हीराचंद रायकरण का शांतिनाथ भगवान का मंदिर है वहां पहले स्थंभन पुरावतार श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर था। ये दोनों जिनालय महामात्य वस्तुपाल ने बनवाये थे। वे पंद्रहवीं तक विद्यमान थे। इसके पश्चात् वे लुप्त हो गये। इन मंदिरों के पास पूर्वकाल में कवड यक्ष की देहरी होनी चाहिये। वर्तमान में उस यक्ष की देहरी दाहिनी ओर स्थित है।

समय के परिबल के कारण उसमें परिवर्तन हो गया है। वर्तमान काल में वाघणपोल में यात्रीगण आते हैं। दर्शन तथा भक्ति करते हैं। वाघणपोल के द्वार पर यदि खडे रहे तो दोनों ओर मंदिरों की कतार दिखती है। शांतिनाथ भगवान के मंदिर से निकलने पर कुछ सीढियां नीचे उतरने पर सं. १८५७ में करमाशाह द्वारा प्रतिष्ठित की गई शत्रुंजय की अधिष्ठायिका देवी चक्रेश्वरी माता का मंदिर आता है। उसके बाहर के भाग में पद्मावती, निर्वाणी, सरस्वती और लक्ष्मीजी इन चार देवियों की मूर्तियां हैं। समीप के छोटे मंदिर में वाघेश्वरी और पद्मावती की मूर्तियां है। (जै.ती. सर्व संग्रह १०३)

बायीं ओर के सभी मंदिर कतारबद्ध और उत्तराभिमुख हैं, जबकि दायीं ओर जो जिनालय हैं, उनमें से कोई पूर्वाभिमुख है तो कोई दक्षिणाभिमुख है।

बायीं ओर अधिक पुराना मंदिर सं. १३७६ का है। परन्तु दायीं ओर सत्ररहवीं शताब्दी के लगभग चार मंदिर होंगे। शेष अन्य मंदिर तो अठारहवीं या उन्नीसवीं शताब्दी के हैं।

## भूलवाणी अर्थात् चोरीवाला मंदिर

भूलवणी का मंदिर - यह मंदिर आबू पर्वत पर स्थित देलवाडा के विमलशाह के मंदिर के नमूनों की नक्काशी है। ऐसी नक्कशीवाले घुम्मट आदि गिरिराज पर अन्यत्र होंगे या नहीं ये विचारणीय है। ईन्हं कारणों से इसे विमलवसही कहा जाता होगा। इसके भीतर तीन मंदिर है। इसके चारों ओर घूमते हुए छोटी छोटी बहत्तर देवकुलिकाए हैं। विमलवसही के कहलाने वाले सभी मंदिरों में केशवजी नायक के मंदिरों को छोडकर यह सबसे बडा मंदिर है। छोटे से स्थान में भी विस्तृत और प्राचीन इस मंदिर का इतिहास वेत्ता बहुत प्रशंसा करते हैं। मंदिर क प्रवेशद्वार पर (वास्तव में तो यह मुख्य प्रवेशद्वार नहीं है। मुख्य प्रवेशद्वार तो पीछे है ) चोकोर प्रांगण की रचना की हुई है। अंदर प्रवेश करने पर मनोहर शिल्पकृतियुक्त स्तंभ और उन पर स्थापित पद्मशिलायुक्त, सुंदर छतवाला रंगमंडप देखने दिखाई देता है। रंगमंडप के पश्चात् गूढमंडप और उसके पश्चात् प्रासाद आता है। जिसमें पहले तो आदिनाथ भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी ऐसा प्राचीन तीर्थमालाओं में लिखा है। गूढमंडप के द्वार के आस पास सुंदर जालीदार

नक्शीयुक्त गवाक्ष बनाये गये हैं। गूढमंडप के उत्तर दक्षिण आधारस्तंभों का भिन्न भिन्न नक्काशीवाली छत्त और देवकुलिकाओं के साथ जोड गया है। पीछे के भाग में तीन कोट वाला सुन्दर मेरु है। अगल बगल में दो बडी देहरियां है। उनमें तीर्थमालाओं के कथनानुसार पार्श्वनाथ और नेमिनाथ बिराजामन थे। दोनों देहरियां को जोडने वाली छतों में नागपाश रासलीला आदि की कलाकृतियां है। रंगमंडप के तीन घुम्मटों पर विभिन्न प्रकार की नक्काशी, पंच कल्याणक वगैरह वगैरह विधिध वस्तुए उकेरी गई हैं। झूलती हुई देवियां (कदाचित् वे विद्यादेवियां भी हों) हैं।

मेरु से नीचे उतरने पर दायीं और नेमनाथ का अर्ध निर्मित चँवरी है। उसके छतपट पर नेमनाथजी का जीवनचरित्र चित्रांकित किया गया है। यहां एक बडा द्वार है। उसके अगल बगल में दो गवाक्ष हैं, उसमें पत्थर पर यक्ष यक्षिणी उत्कीर्ण किये गये हैं।

विमलवसही के आगे चलने पर मोक्ष की खिडकी वाला स्थान है। उसमें एक उंटनी का पूतला है। उसके पैरों के बीच से निकलना होता है, इसलिये उसे मोक्ष की बारी कहते हैं। उसके बाद पाटण निवासी शेठ पन्नालाल कोटावाले बाबू द्वारा निर्मित सुंदर मंदिर है। आगे चलने पर धर्मनाथ भगवान का मंदिर हैं। चौदहवीं शताब्दी की नक्काशीवाला है। कदाचित् यही मंदिर जगत् शेठ का हो। वि.सं. १६८३ में हीराबाई द्वारा बनवाया गया चंद्रप्रभु का मंदिर आता है। उसमें मंडप में सुंदर नक्काशीयुक्त बंदनवार है। इसी मंदिर को लगते हुए थोडा पीछे हटकर जामनगर के ओसवाल बंधुओं द्वारा बनवाया गया सं. १६७८ का शांतिनाथ भगवान का मंदिर है और एक सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ का मंदिर भी है।

## कुमार विहार

इस पूरी लाईन के छोर पर कुमारपाल के मंदिर के नाम से पहचाना जाने वाला मंदिर है। विद्वानों के अनुसार सं. १३७७ के आसपास इस मंदिर का निर्माण हुआ है। कुमारविहार के पंद्रहवी शताब्दी में होने के दो उल्लेख मिलते हैं, कहीं यह वही तो नहीं ? इस मंदिर में आदीश्वर भगवान हैं। मंदिर के मुख पर सुंदर चोक है अंदर मंडप और चारों ओर चोवीस देहरियां है। मूलमंदिर तथा झरोखे व सुंदर घाट आदि से यह मंदिर विभूषित है। इसकी परिधि के दो छोर

पर, दो परिधियों से मिलते हुए मंदिर की एक दीवार पर सुंदर १४ स्वप्न आदि की नक्काशी की गई है।

कुमार विहार के बाद उस हाथी पोल के बीच में गली है, उस गली से पीछे की ओर जा सकते हैं।

## सूर्यकुंड-सूरजकुंड

यहां सूर्यकुंड है, जिसकी महिमा का बहुत वर्णन होता है। इसके जल द्वारा महिपाल राजा के रोग का शमन हुआ था, मुर्गा बना हुआ चंद्रराजा कुंड के जल के प्रभाव से चंद्रराजा अपने असली रुप में पुन: परिवर्तित हुआ था। इस कुंड के बाद भीमकुंड आता है फिर तीसरा ब्रह्मकुंड और उसके बाद इश्वरकुंड आता है। वहां एक देहरी है। उसमें शिवलिंग स्थापित है। इसका कारण संभवत यह हो कि वहां के पूर्वजों ने पूजारी को उसके धर्मानुसार भगवान की पूजा कर पाये इसलिये उदारता का परिचय देकर उसे यह मंदिर बनाने दिया हो। सूर्यकुंड पर मुर्गे का चित्र आज भी विद्यमान है।

एक बात और - बायीं ओर के सभी मंदिरों के पीछे गहरे टंके हैं उनका पानी प्रभुजी के प्रक्षालन के काम आता है।

## टंके और कुंड

कुंड पत्थरों को काटकर बनाये जाते हैं। उनमें पानी बाहर न निकल जाये उसकी सावधानी रखी जाती है। वे खुले होते है। उनका पानी नहाने और पीने के उपयोग में लिया जाता है। जबकि गिरिराज पर बडे बडे टंके भी हैं। टंक उसे कहा जाता है जिसके चारों ओर मजबूत कोट होता है। उसका पानी कहीं से भी बाहर न निकले ऐसा मजबूत होता है। उसे उपर से ढंक दिया जाता है, और ढक्कनवाला दरवाजा उपर बनाया जाता है। जब पानी निकलना हो तब उसे खोला जाता है। उसका पानी प्रभुजी के प्रक्षालन में लिया जाता है। उसमें पानी आसपस के स्थानों पर हुई वर्षा द्वारा एकत्रित होता है। उसमें अंदर उतरने के लिये सीढियां नहीं होती। परन्तु कुंडो में उतरने के लिए सीढियां होती हैं।

वाघणपोल की दायीं और प्रथ मंदिर केशवजी नायक का आता है उसके दो द्वार हैं। एक सगालडपोल में आता है और एक वाघणपोळ में। यह

मंदिर सं. १९२८ में बनवाया गया है। उसके बीच मे मुख्य मंदिर से सामने पुंडरीक स्वामी की देहरी है। यह मंदिर उपर नीचे इसप्रकार दो भागों में विभाजित है। चारों ओर देहरियां हैं। मुख्य मंदिर में समवसरण, बायें हाथ की ओर समेतशिखर, दाये हाथ की ओर मेरु, दूसरी ओर अष्टापद, व एक अत्य रचना है। वाघणपोळ की ओर निकलने पर राधनपुर वाले मसालिया परिवार द्वारा बनवाया गया प्रभु का देहरासर है। नीचे मार्ग पर कवडयक्ष की देहरी है।

संवत १७९१ में भंडारी द्रुरा बनवाया गया उंचे चबूतरे वाला तथा कई पायदानों वाला श्यामल श्री अमीजरा पार्श्वनाथ का मंदिर है।

इसके बाद संवत १७८८ में शाह प्रेमचंद रतनजी के द्वारा बनवाया गया चंद्रप्रभुजी का मंदिर आता है। बोगलशावालों के द्वारा बनवाया गया संभवनाथ भगवान का मंदिर है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर है, वह बाहर से देखने पर घर जैसा दिखता है। परन्तु उसकी बनावट कुछ भिन्न ही है। अंदर पत्थर की सुंदर छत्री बनी हुई है। उसमें सिहासन पर पार्श्वनाथ भगवान की मनोहर प्रतिमा है। उसके आगे का द्वारा भी आरस पत्थर का है। उस द्वार के दोनों ओर अर्थात् एक तरफ नंदीश्वरद्वीप का तादम्य चित्रांकन पत्थर में किया गया है। जंबूद्वीप से लेकर नंदीश्वरद्वीप तक का समस्त क्षेत्राधिकार नंदीश्वरद्वीप के पर्वत आदि उस पर चित्रांकित हैं। चैत्य में भगवान की प्रतिमा अति सूक्ष्म कला से निर्मित की गई है। दूसरी ओर अष्टापद पर्वत और २४ देहरासर इत्यादि में रावण मंदोदरी, गौतमस्वामी, तपस्वीयों, खाई आदि का चित्रांकन किया गया है। अद्भुत कलाकृति कैसी होती है यह इन दो नक्काशियों में दिखाई देता है। इसके आगे दो आरस के सुंदर हाथी बनाये गये हैं।

सं. १९६९में पाटण के शेठ डुंगरशी मीठाचंद लाधा के द्वारा बनवाया गया चंद्रप्रभुस्वामी का मंदिर है। सुरत के केशरीचंद वहोरा के द्वारा बनवाया गया संभवनाथ भगवान का मंदिर है। तथा पाटण के शेठ मीठाचंद द्वारा बनवाया गया अजितनाथ भगवान का मंदिर भी है।

सं. १७८८ में निर्मित श्री महावीर भगवान का देहरासर है। इसके तीन कोट हैं। अर्थात् वे समवसरण के तीन कोट हैं। पहले कोट में वाहन, दूसरे कोट

में तिर्यंच, और तीसरे कोट में १२ पर्षदा है। मध्य में सिंहासन पर चतुर्मुख भगवान हैं। करवाने वाले ने शिलालेख में उत्कीर्ण करवाया है कि विशेषावश्यक में समवसरण की जो रचना मैंने सुनी है, उसी के आधार पर यह समवसरण का देहरासर बनवाया है। यह मंदिर सुरतवाले सोमचंद कल्याणचंद ने बनवाया है।

इसके बाद संवत १८६० में झवेरभाई नानजी द्वारा बनवाया गया श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर है। और इसी संवत में अहमदाबाद के शेठ नानचंद माणेकचंद माणेकवालों के द्वारा बनवाया गया धर्मनाथ भगवान का मंदिर भी है। साथ ही मोरबीवाले पीतांबरदास पदमशी के द्वारा बनवाया गया सं. १९१३ का महावीरस्वामी का मंदिर है। ये सभी मंदिर उठारहवीं/उन्नीसवीं शताब्दी में निर्मित कहे जा सकते हैं। इन्हे उन्नीसवीं शताब्दी के मंदिर भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त जहां जहां स्थान मिला वहां वहां अन्य छोटे छोटे मंदिर भी बनाये गये हैं।

इसके पश्चात् सं. १६७५ में जामनगर के रायसी शाह द्वारा बनवाया गया श्री श्रेयांसनाथ भगवान का शिल्पविभूषित मंदिर भी हैं।

ईशान कोण में जोधपुर वाले मनोत्तमल्लजी जयमल्लजी के द्वारा सं. १६८६ में बनवाया गया एक बडा चतुर्मुख मंदिर है। इस मंदिर की चारों दिशाओं में मंडप है। उस मंडप के स्तंभों को गिनने पर उनकी संख्या सौ है। इस कारण इसे शतस्तंभीय मंदिर भी कहते हैं। उसके स्तंभों पर गर्भगृह के समीप में सुंदर बंदनवार है। हमारी भाषा में वे कमान हैं। दक्षिण दिशा के मंडप की छत्त में कुछ सुंदर नक्काशीकाम भी है। शिखर भी शिल्प के आधार से सुंदर नक्काशीवाला है। वाघणपोल के सभी मंदिरों में सबसे उंचा शिखर इस मंदिर का है।

उसके समीप में सं. १६७५में अहमदाबाद के शेठ रीखवदास वेलजी द्वारा बनवाया गया संभवनाथ भगवान का मंदिर है।

इसके बाद कपडवंज की शेठानी माणेकबाई के द्वारा बनवाया गया ऋषभदेव भगवान का मंदिर है। उसमें कई प्रतिमाई प्रतिष्ठित हैं। इन सभी मंदिरों के समूह के पीछे सत्रहवीं शताब्दी में निर्मित दिगंबर परंपरा का मंदिर है।

## श्री धनेश्वरसूरिजी

शतस्तंभीय मंदिर के नीचे के भाग की देहरी में श्री शत्रुंजयमहात्म्य के रचयिता श्री धनेश्वरसूरिजी की आरस की बनी हुई विशाल मूर्ति बिराजमान है।

## हाथीपोल

पहले हाथी पोल के द्वार के दोनों ओर विशालकाय मनोहर हाथी विचित्र थे। द्वार के एक तरफ दोनों ओर ओमकार तथा दूसरी ओर ह्रीं कार, आरस के पत्थर पर उकेर कर एक के उपर पांच और दूसरे पर चोवीस रंगीन प्रतिमाए उत्कीर्ण की हुई थी। बायीं ओर वि.सं. १८७६ का आरस उत्कीर्ण किया गया शिलालेख जडा हुआ था।

वर्तमान में हाथीपोल का नवीन द्वार बनाया गया है, तथा द्वार के दोनों ओर पाषाण के सुंदर हाथी बनाये गये हैं।

हाथीपोल की दायीं ओर अर्थात् कुमारपाल महाराजा के देहरासर की बगल से होकर पीछे जाते हैं वहां जाने पर खिडकी से बाहर निकलने पर सूर्यकुंड और भी भीमकुंड आते है। उनके बाद ब्रह्मकुंड और ईश्वरकुंड आते हैं। सूर्यकुंड के उपर मुर्गे से चंद्रराजा बनने का नक्कारशी किया गया गवाक्ष है। आगे मनोहर, छत्रीवाला विश्राम स्थान हैं तथा सं. १९४५ में प्रतिष्ठित की हुई श्री आदीश्वर भगवान के पदचिह्नों की एक देहरी हैं। यहां एक शिव मंदिर भी है।

## रतनपोल - दादा की टूंक

रतनपोल का द्वार पाषाण का नया सुंदर बनाया हुआ है। रतनपोल के द्वार में होकर अर्थात् पुंडरीक स्वामी के नीचे से पायदान चढकर आगे जाते हैं। आगे चलने पर स्नात्र मंडप आता है। यह दादा के मंदिर के आगे के चोक में है। इ चोक के तल का निर्माण घुलीआ निवासी सखाराम दर्लभदास ने करवाया है। उसमें प्रभुजी को प्रतिष्ठित कर स्नात्र पढा जाता है तथा पूजा होती है। मंडप में छाया करने के लिये लोहे की पाइप आदि लगाकर ढंकने का कार्य, खंभातवाले शेठ पोपटलाल अमरचंद ने करवाया है।

वहां से श्री आदीश्वर दादा के मंदिर में जा सकते हैं। इस जिनालय का भरत महाराजा से लेकर करमाशा तक सोलह जीर्णोद्धार हुए है। यह मंदिर (वर्तमान में जो है) वि.सं. १२१३ में बाहडमंत्री द्वारा करवाये गये उद्धार वाला है। पंद्रहवें और सोलहवें उद्धार में मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान की मूर्ति नवीन प्रतिष्ठित की गई है। वर्तमान में भी करमाशा के उद्धार का वि.सं. १५८७का

शिलालेख प्रतिमा पर आलेखित विद्यमान है। दादा का की प्रतिमा परिकर तब नहीं था। वर्तमान में जो परिकर है वह अहमदाबाद के शेठ शांतिदास आदि ने बनवाया है। उसकी प्रतिष्ठा वि.सं.१६७० में श्री विजयसेनसूरीश्वरजी एवं श्री विजयदेवसूरि महाराज ने की है।

## दादा के दर्शन

रतनपोल में पायदान चढते ही मध्यभाग में भव्य गगनचूंबी उंचे मनोहर शिखरवाला घुम्मटों की कतारों से सुशोभित बडा जिनमंदिर और मूलनायक तीर्थाधिपति दादाश्री आदीश्वर भगवान दिखाई देते हैं। दादा के दर्शन होते ही यात्रियों के शीश झुक जाते हैं। 'जय आदिनाथ' 'जय दादा' की ध्वनि सुनाई देती है। दादा के दर्शन करने पर हृदय झूम उठता है। संताप भूल जाते हैं और भावना प्रबल हो जाती है। इतना ही नहीं अपितु चित्त ऐसा निमग्न जाता है कि वहां से हटने का मन ही नही करता।

लोग दादा के दर्शन करते हैं स्तुति करते हैं चैत्यवंदन करते है, कायोत्सर्ग करते हैं। क्षमायाचन करते हैं। आप करते हैं, ध्यान धरते हैं और धन्यता का अनुभव करते हैं। प्रभु के दर्शन में लीन, निमग्न हो जाते हैं। छोटे बालकों से लेकर बडी उम्र के स्त्री-पुरुष सभी यहां आकर दादामय हो जाते हैं। प्रार्थना, स्तवन, विनति, काव्यों के स्वर वातावरण को भावविभोर भक्ति से छलका देते हैं छोटे छोटे बालमुनि, बाल साध्वियों से लेकर बडे बडे महान आचार्य भगवंत, साधु-साध्वी महाराजों को बडी संख्या में आकर प्रभु के दर्शन-वंदन-चैत्यवंदन करते हुए देखना भी एक अनोखा आनंद है। कईयों की आंखो से निरंतर अश्रु बहते रहते हैं! प्रभु को एकटक निहारते हुए उनकी आंखे नहीं थकती। शब्दों में कहे तो 'शत्रुंजय के धनी' के गुणगान न समायें ऐसा जीता-जागता दादा का दरबार कभी कभी तो ऐसा भरता है कि खडे रहने की जगह नहीं होती! सभी की एक ही अभिलाषा होती है, सभी के होंठो पर एक ही नाद और नाम होता है बस 'दादा आदेश्वरजी दूर थी आव्यो दादा दर्शन दो' की ध्वनि गीत के साथ समस्त वातावरण संगीतमय बन जाता है। एकांत भी मानो कोलाहल पाकर हंसता हो!

मंदिर की रचना अति सुंदर मनोहर है। दादा का मंदिर भूमितल से

बावन हाथ उंचा है, शिखर पर १२४५ कलश हैं। इक्कीश सिंहो के विजय चिह्न से शोभित है। चारों दिशा में चार योगिनियां हैं। दश दिक्पालों के प्रतीक रक्षकों का संकेत दे रहे हैं। मंदिर की विशालता का परिचय देती हुई गर्भगृह के आसपास बहत्तर देवकुलिकाए निर्मित हैं। चार गवाक्ष उसकी भव्यता में वृद्धि करते हैं। बत्तीस पूतलियां और बत्तीस बंदनवार इस मंदिर को कलाकृति से पूर्ण करते हैं। मंदिर को आधार देने हेतु कुल बहत्तर आधार स्तंभ अपनी कलापूर्ण रचना को प्रकट करते हैं। इस प्रकार की स्वांग सुंदर रचना के पीछे अपनी अपार संपत्ति लगाने वाले खंभात के तेजपाल सोनी ने वि.सं. १३४९ में इस मूलमंदिर को नंदिवर्धन प्रासाद ऐसा नाम देकर आचार्य भगवंत विजयदानसूरीश्वरजी तथा विजयहीरसूरीश्वरजी के वरद हस्तों से पुनःप्रतिष्ठा करवाई थी। इस सभी कार्यो में उन्होने भारी धन का सदुपयोग किया था।

वर्तमान दादा की प्रतिमा के आसपास जो भव्य और सुंदर परिकर है, उसका निर्माण वि.सं. १६७० में अहमदाबाद के शाह सोदागर झवेरी शांतिदास शेषकरण और उनके भाई शेठ वर्धमान शेषकरण ने करवाया था व उसकी प्रतिष्ठा आचार्य भगवंत सेनसूरीश्वरजी व देवसूरीश्वरजी के हस्तकमलों से की गई है।

दाद के गर्भगृह में स्थित अन्य प्रतिमाए तथा मंडप में स्थित महावीर भगवान इत्यादि सभी प्रतिमाओं के दर्शन से भावुक भक्तजन धन्य धन्य हो जाते हैं। दादा की यात्रा करनेवाले भक्तजन तीन प्रदक्षिणा देते हैं।

## प्रथम प्रदक्षिणा

यहां से प्रथम प्रदक्षिणा प्रारंभ होती है। बाहर निकलने पर सहस्त्रकूट आता है। इसलिये इस परिक्रमा मार्ग पर चारों दिशाओं में परिक्रमा के मार्ग के अनुरुप १०२४ प्रतिमाए स्थापित की गई हैं।

संवत १७१८ में उग्रसेनपुर के निवासी वर्धमान शाह ने यह सहस्त्रकुट मंदिर बनवाया हैं। इसका उल्लेख सहस्त्रकुट के आगे के दो स्तंभों पर उत्कीर्ण किया गया हैं।

## सहस्त्रकूट की रचना

इसमें १०२४ श्री जिनेश्वर भगवान की प्रतिमाए हैं, वे निम्नप्रकार से हैं। पांच भरतक्षेत्र, पांच ऐरवतक्षेत्र, उनकी वर्तमान काल की चोवीसी अर्थात् २४०

इसी प्रकार दश क्षेत्रों के भूतकाल की चोवीसी अर्थात् २४०
चोवीस तीर्थंकर भगवंतो के पांच पांच कल्याणक अर्थात् १२०
पांच महाविदेहक्षेत्र के उत्कृष्ट काल के तीर्थंकर ३२★५ - १६०
पांच महाविदेहक्षेत्र के अधन्य काल में विद्यमान ४★५ - २०
तथा ४ शाश्वतजिन इस प्रकार कुल १०२४ प्रतिमाएं होती हैं।

दादा के मंदिर की परिधी में तीन और अलग अलग देहरियां थीं जिसमें वि.सं. १६२० के शिलालेख थे। इसके उपरांत अन्य दूसरे लेख भी थे। सं. २०२० के बाद वे देहरियां आदि हटा दी गई हैं। उस समय रतनपोल में अलग अलग जगह से लगभग ५०० प्रतिमाई उत्थापित की गई हैं। तथा वे स्थान भी हटा दिये गये हैं। इन सभी को वहां से हटाकर शिखर के अंग इत्यादि को खुल्ला किया गया है।

गणधरों की चरणपादुकाएं पगलिएं

| तीर्थंकर | गणधर-संख्या | तीर्थंकर | गणधर-संख्या |
|---|---|---|---|
| १. ऋषभदेव | ८४ | १३. विमलनाथ | ५७ |
| २. अजितनाथ | ९६ | १४. अनंतनाथ | ५० |
| ३. संभवनाथ | १०२ | १५. धर्मनाथ | ४३ |
| ४. अभिनंदनस्वामी | ११६ | १६. शांतिनाथ | ३६ |
| ५. सुमतिनाथ | १०० | १७. कुंथुनाथ | ३५ |
| ६. पद्मप्रभु | १०७ | १८ अरनाथ | ३३ |
| ७. सुपार्श्वनाथ | ९५ | १९. मल्लिनाथ | २८ |
| ८. चंद्रप्रभु | ९३ | २०. मुनिसुव्रतस्वामी | १८ |
| ९. सुविधिनाथ | ८८ | २१. नमिनाथ | ११ |
| १०. शीतलनाथ | ८१ | २२. नेमिनाथ | १७ |
| ११. श्रेयांसनाथ | ७६ | २३. पार्श्वनाथ | १० |
| १२. वासुपूज्य स्वामी | ६६ | २४. महावीरस्वामी | ११ |

**गणधर भगवंत कुल १४५२ पगलिये**

वहां दर्शन करने के बाद श्री सीमंधरस्वामी के नाम से परिचित मंदिर में

जाते हैं। (वास्तव में तो इस मंदिर के मूलनायक भगवान पर श्री आदीश्वर भगवान का नाम अंकित है। इनकी प्रतिष्ठा सं. १६७७ में की गई है) उस गर्भगृह में और बाहर के मंडप में अन्य प्रतिमाए हैं। उन पर भिन्न भिन्न लेख भी हैं। श्रावक श्राविका की मूर्ति भी मंडप में है।

रंगमंडप में देवी की मूर्ति भी है। उसे अमका (अंबिका)देवी कहते हैं।

## दूसरी प्रदक्षिणा

यहां से दूसरी प्रदक्षिणा आरंभ होती है। यह मंदिर वस्तुपाल तेजपाल के द्वारा बनवाया गया है। ऐसा अनुमान है। वर्तमान में यह देहरासर नवीन आदीश्वर जिनालय के नाम से पहचाना जाता है।

इसके दर्शन करके निकलने पर अर्थात् बाहर चोक समीप में पादुकाओं की देहरियां हैं, उनकी बगल में छोटी सी गली से निकलकर पीछे जाते हैं। वहां मेरु आता है।

## मेरु

पहले यह मेरु पुराना था। परन्तु अहमदाबाद के शेठ माणेकलाल मनसुखभाई श्रीगिरनार और श्री शत्रुंजय गिरिराज का सं. १९९१में छरी पालक संघ लेकर आये थे। उसकी स्मृति में तीन कोट वाला आरस का सुशोभित मेरु पुन: नवीन बनाया गया है। उसमें चूलिका भी है और चतुर्मुख भगवान भी है।

उसके दर्शन कर परिधि में चलते चलते आगे दर्शन करते हुए आगे बढते हैं फिर रथ वगैरह को रखने के स्थान के आगे होकर नीचे उतरते हैं। फिर समवसरण के देहरासर के दर्शन करते हैं। यह मंदिर संघवी मोतीचंद पाटणवालों ने सं. १३७५ में बनवाया है, इसके पास ही सम्मेतशिखर का मंदिर है। उसमें आठ दिशाओं में कुल २० प्रतिमाएं हैं। और नीचे पादुकाए हैं। इसलिए इसे सम्मेतशिखर का देहरासर कहा जाता है। यह देहरासर सं. १७४४ में बनवाया गया है। ये दोनों देहरासर संलग्न हैं।

आगे चलने पर बगल में, कोने पर नवण (प्रल जल) डालने की एक बारी है। वहां से नवण बाहर निकलता है। उससे आगे एक देहरी में भरत

बाहुबली एवं नमि विनमि की मूर्तियां हैं।

## समराशा और उनकी पत्नी

आगे दर्शन करते हुए चलने पर एक देहरी के गवाक्ष में श्रावक श्राविका की खडी हुई मूर्तियां हैं। ये समराशा और उनकी पत्नी का प्रतिक हैं। जिन्होनें पंद्रहवां उद्धार किया था।

देहरी में प्रभुजी के दर्शन कर आगे चलने पर १४ रतन का देहरासर आता है। इस देहरासर को इस प्रकार बनाया गया है कि गर्भगृह और रंगमंडप को मिलाकर १४ प्रतिमाए है। इसलिए इस देहरासर को चौदह रतनों का देहरासर कहा जाता है। वहां पर दर्शन कर आगे चलने पर जहां दूसरी प्रदक्षिणा पूर्ण होने को आती है वहा पर एक देहरी को खोलकर रास्ता बनाया गया है। वहां से पीछे अंदर की नयी टूक में जाया जाता हैं।

## नयी टूक

इस नयी टूक का जो निर्माण किया गया है उसमें रतनपोल से भिन्न भिन्न स्थानों से उत्थापित की हुई जो लगभग ५०० प्रतिमाए थी उन्हें प्रतिष्ठित किया गया है। शेष कुछ प्रतिमाएं दादा के मंदिर में और कुछ अन्य स्थलों पर प्रतिष्ठित की गई हैं। इस टूक के मध्य में मुख्य मंदिर शिखरबद्ध निर्मित कर इस टूक का विधिवत् निर्माण किया गया है।

यहां से दर्शन कर बाहर निकलने पर आगे चलकर एक गवाक्ष ऐसा आता है कि उसमें २४ तीर्थंकरों की माताओं ने अपने पुत्रों (तीर्थंकरो) को गोद में लिया हुआ है। यह भी आरस पत्थर पर उत्कीर्ण की गई हैं। आगे चलने पर अंत में गंधारिया का देहरासर आता है।

## गंधारिया चौमुखजी

इस देहरासर का निर्माण रामजी गंधारिया ने सं. १२६० की कार्तिक सुदी-२ के दिन करवाया था। इसमें चौमुखजी भगवान बिराजमान हैं। देहरासर के चारों ओर चार चोकियां हैं। इन चारों चोकियों में नक्काशी वगैरह सब उपर हैं। इनमें भी प्रतिमाएं हैं, कला की द्रष्टि से शिल्पी ने एक अद्भूत कलाकृतिमय

देहरासर बनाया है। मूल गर्भगृह में चारों भगवंत की मूर्तियां मनोहर हैं। यहां से आगे पुंडरीक स्वामी के मंदिर में जाते हैं।

## पुंडरिकस्वामी का मंदिर

इस मंदिर के मूलनायक श्री पुंडरिकस्वामी सोलहवें उद्धार कर्ता करमाशा के द्वार सं. १५८७ में प्रतिष्ठित किये गये हैं। इस प्रतिमा पर ऐसा लेख विद्यमान है। श्री पुंडरिकस्वामी के गर्भगृह में अनेक प्रतिमाएं हैं। इसके मंडप में दो कमरों में भी अनेक प्रतिमाए हैं।

## नवटूंक ( नौ टूक )

शत्रुंजय जिरिराज के उपर चढने पर हनुमानधारा आती है। एक मार्ग नवटूक की और जाता है। उस मार्ग से चढने पर नवटूक की खिडकी आती है। उसमें प्रवेश करने पर हमारे बायें हाथ की ओर आगे चलने पर अंगारशा पीर का स्थान आता है।

## नवटूक का द्वार

वहां से आगे चलने पर नवटूक के द्वार की तरफ एक बडा कुंड आता है। इस कुंड का नाम वल्लभकुंड है, इसका निर्माण शेठ जेठालालभाई के मुनीम वल्लभदास ने करवाया है। कुंड से आगे चलने पर नवटूक का प्रवेशद्वार आता हैं। वहं पर मनोहर नवीन बनवाया गया विश्रामगृह हैं। यहां से प्रवेश करने पर खरतरवसही में गये हैं ऐसे अनुभव होता हैं।

## ( १ ) नरशी केशवजी की टूक :-

यहां पर यात्रामार्ग में दाहिनी ओर शेठ नरशी केशवजी की टूक आती है। इसका निर्माण सं. १९२१ में हुआ है। इसमे मध्य में मुख्य मंदिर और चारों ओर चोवीस देहरियां व अन्य १७ देहरियां हैं वे सभी रिक्त हैं अर्थात् उनमें प्रभुजी की प्रतिमा प्रतिष्ठित नहीं की गई हैं।

## संप्रति महाराज का देहरासर

बायें हाथ की और संप्रति महाराज के नाम से प्रसिद्ध देहरासर आता है। वह

शांतिनाथ भगवान का देहरासर है। उसमें कई सुधारकार्य हुए हैं परन्तु गर्भगृह की पुरानी बारशाख नक्काशी आज भी विद्यमान है, वह बहुत सुंदर है। इस देहरासर की बायीं ओर एक विशाल कुंड हैं।

आगे चलने पर भिन्न भिन्न देहरासर है। उनमें बाबु हरखचंद गुलेच्छा मुर्शिदाबादवालों द्वारा बनवाया गया एक देहरासर है। तथा समुतिनाथ भगवान के देहरासर का निर्माण बाबु प्रतापसिंह दुग्गल द्वारा सं. १८९३ में करवाया गया है। संभवनाथ भगवान का देहरासर सं. १८९१ में निर्मित है। और ऋषभदेव भगवान का देहरासर है। हाला कुंडीवालों के द्वारा बनवाया गया सं. १८९३ का चंद्रप्रभु का देहरासर है। मरुदेवी माता का प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर मे मरुदेवी माता हाथी पर बैठी हुई हैं। वह हाथी आगे आ रहा है ऐसा दृश्य दिखाई देता है। मरुदेवी माता ने हाथी पर बैठे हुए ही केवलज्ञान पाया व मोक्ष प्राप्ति की। यह इस दृश्य का भाव है। कच्छी बाबुभाई के द्वारा सं. १७७१ में बनवाया गया चौमुखजी का देहरासर है। सं. १८८५ में बाबु हरखचंद दुग्गल के द्वारा बनवाया गया श्री चंद्रप्रभु का देहरासर है। सं. १८८८ में लखनउ के शेठ कालीदास चुनीलाल के द्वारा बनवाया गया अजितनाथ भगवान का देहरासर है। सं. १८२७ में शेठ हिंमतलाल लुणिया के द्वारा बनवाया गया श्री कुंथुनाथ भगवान का देहरासर है।

## ( २ ) सवासोमा की टूक ( चौमुखजी की टूक )

उपर बताये गये मंदिरों के दर्शन कर आगे चलने पर चौमुखजी की टूक का द्वार आता है। उसमें प्रवेश करने पर चौमुखजी का मंदिर आता है। इस मंदिर का निर्माण सवासोमजी ने करवाया था। इसके शिखर की चोटी २०से २५ मील की दूरी से दिखाई देती है। इस टूक की लंबाई और चौडाई २७० ★ ११६ फूट की है। चोक के मध्य में चतुर्मुख श्री आदिश्वर भगवान का मंदिर है, आगे इसका रंगमंडप है। तीन ओर चोकियां हैं। पीछे के भाग में चौमुखजी के देहरासर से लगती हुई देहरिया हैं। इस देहरासर की प्रतिष्ठा सं. १६७५ में हुई है।

सवासोमा की चौमुखजी टूक में चौमुखजी के सन्मुख सं. १६७५ प्रतिष्ठित

श्री पुंडरीकस्वामी का मंदिर है। अहमदाबाद के शेठ डाह्याभाई के द्वारा बनवाया गया सहस्त्रकूट का मंदिर है। सं. १६७५ में शेठ सुंदरदास रतनदास द्वारा बनवाया गया शांतिनाथ भगवान का मंदिर है। इसके अलावा शांतिनाथ भगवान का एक अन्य मंदिर भी है। सं. १८५६ में प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर है। इस देहरासर में पाषाण में उत्कीर्ण की गई एक चोवीसी है। और तीन चोवीसी की एक एक प्रतिमाएं हैं। अहमदाबाद के शेठ करमचंद हीराचंद द्वारा सं. १८८४ में बनवाया गया श्री सीमंधरस्वामी का मंदिर है। अजमेर वाले धनरुपमल द्वारा बनवाया गया आरस का एक देहरासर है। अहमदाबाद वाले भणशाली करमसिंह द्वारा बनवाया गया अजितनाथ भगवान का देहरासर है। इस टूंक के एक मंदिर के परिकर पर सं. १३३७ का शिलालेख है। और एक स्थान पर १६७५ का शिलालेख है तथा एक अन्य स्थान पर सं. १६७५ का ही दूसरा शिलालेख भी है। वि.सं.१६८२ में प्रतिष्ठित १४५२ गणधरों के पदचिह्न हैं। यहां देहरी क्रं. ८७२ में एक धातु प्रतिमा पर सिद्धहेम कुमार संवत् इसप्रकार का उल्लेख किया हुआ मिलता है।

## पांडवों का देहरासर

सवासोम की टूक से पीछे की खिडकी से बाहर निकलने पर चार पांच पायदान चढने पर पांडवों का देहरासर आता है। उसमें पांच पांडव, माता कुंति औश्र द्रौपदी की मूर्ति है। उस पर सं. १७८८ का लेख है। उसके चोगान में पत्थर का सुंदर मनोहर स्थापत्य है। (डो. मधुसूदन ढांकी के कथनानुसार इस पांच पांडवों के मंदिर का निर्माण १४२१ में शा. दलीचंद किलाभाई ने करवाया है वास्तव में यह मंदिर मांडवगढ के मंत्री पेथडशाह के द्वारा बनवाया गया था।) पहले इस मंदिर में श्री आदीश्वर भगवान बिराजमान होंगे, उसके पश्चात् इसमें परिवर्तन हुआ है ऐसा माना जा सकता है। इस मंदिर के मंडोवर और शिखर में सुंदर नक्काशी की गई है। मंदिर दक्षिणाभिमुख है।

## सहस्त्र कूट

पांडवो के देहरासर के पीछे सहस्त्रकूट का देहरासर स्थित है। (सहस्त्रकूट

की रचना का वर्णन पहले दे दिया है) इस सहस्त्रकुंड पर दो तरफ शिलालेख है। इसकी प्रतिष्ठा सं. १८६० में हुई। इस देहरासर का निर्माण आरस पत्थर में उत्कीर्ण की गई हैं। एकसौ जिन श्री अजितनाथ भगवान के समय में होते हैं।

## १७० जिन

पांच महाविदेह के मिलाकर १६० जिन और पांच भरत, पांच ऐरावत इस प्रकार दश में दश अर्थात् १७० जिन होते हैं। उस पट के दोनो तरफ में से एक और चौदहराज लोक और दूसरी और समवसरण आरसपाषाण में उत्कीर्ण किया गया है। इसकी दूसरी दीवार पर सिद्धचक्र उत्कीर्ण है। वापिस लौटने के समय सवासोमा की टूक की देहरियों के दर्शन करते हुए दूसरी खिडकी से बाहर निकलते हैं, वहां छीपावसही आती है।

## ( ३ ) छीपावसही

खरतरवसही से बाहर की ओर ढलान पर छीपावसही (भावसार की टूक) स्थित है। इस ढलानवाले चोक में ही प्राचीन और ३ अर्वाचीन मंदिर हैं। यह मंदिर १४वीं शताब्दी में भावसार-छीपाओं ने बनवाया है। इस कारण इसे छीपावसही कहा जाता है। गिरिराज के उत्तम मंदिरों में एक यह अत्यंत सूक्ष्म नक्काशीदार मंदिर है। इस मंदिर में अंदर प्रदक्षिणा दी जाती है। इसकी परिधि में २४ गवाक्ष हैं। और आगे के भाग में चोक है। चत्य परिपाटीयों मे टोडरविहार के रुप में परिचित है। ऐसा डो. ढांकी कहते हैं। इसलिये इसकी पुनःप्रतिष्ठा सं. १७१५ में हुई है, ऐसा मानना पडेगा।

कोट की दीवार से लगकर श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मंदिर है। इसके चोक में सुंदर बंदनवार है। यह पुराना मंदिर है।

## श्री अजितशांतिनाथ की देहरी

ढलान पर अजितनाथ और शांतिनाथ भगवान की देहरी परस्पर संलग्न हैं, पूर्वकाल में ये देहरियां आमने सामने थी। इसकारण एक भगवान के दर्शन करने पर दूसरे भगवान की ओर पीठ होती थी। इसलिये नंदीषेण ऋषि ने श्री अजितशांतिस्तव की रचना की, जिससे ये देहरियां एक सीध में आ गई ऐसी

दंतकथा है।

कोट के समीप सं. १७९१ मैं निर्मित ऋषभदेव भगवान का और सं. १७८८ में निर्मित श्रेयांसनाथ भगवान का साथ ही सं. १७९४ में शाह हरखचंद शिवचंद के द्वारा बनवाया गया नेमिनाथ भगवान का देहरासर है। बगल में पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर हैं तथा एक छत्री में पदचिह्न हैं व रायणवृक्ष है। इन सभी मंदिरों में कुल २७ प्रतिमाएं हैं।

## ( ४ ) साकरवसही

आगे चलने पर एक द्वार आता है। वह साकरवसही का द्वार है। इस टूक का निर्माण अहमदाबाद के शेठ साकरचंद प्रेमचंद ने वि.सं. १८९३ में करवाया है। असंख्यात द्वीप समुद्र में आठवां नदीश्वर द्वीप है। जिसमें चारों दिशा में तेरह पर्वत मिलाकर बावन पर्वत हैं। उनके उपर चौमुखजी प्रतिष्ठित हैं। इनके मध्य में जंबूद्वीप स्थित है तथा जंबूद्वीप के मध्य में मेरु स्थित है। इसलिए मेरु का परवत बना कर उसके उपर प्रभु जी प्रतिष्ठित किये गये हैं। इस कारण इस मंदिर को श्री नंदीश्वरद्वीप कहते हैं। इसकी प्रतिष्ठा सं. १८९३ में हुई है। मंदिर के चारों ओर पाषाण की सुंदर नक्काशीदार जाली है। इस टूक को चारों और से घेरता हुआ कोट है। उसमें श्री कुंथुनाथ भगवान का और शांतिनाथ भगवान का देहरासर है। कुंथुनाथ भगवान के देहरासर का निर्माण डाह्याभाई शेठ ने करवाया है। शांतिनाथ भगवान का देहरासर परसनबाई ने बनवाया है। इस टूक में २७४ प्रतिमाए हैं।

## ( ५ ) हेमावसही

श्री नंदीश्वर के देहरासर उपर चढने पर पहले एक छोटा कुंड आता है। उसके समीप ही हेमाभाई शेठ की टूक आती है। अहमदाबाद के शांतिदास शेठ के पौत्र के पौत्र नगरशेठ हेमाभाई ने सं. १८८२ में इस टूंक का निर्माण करवाया है। इसकी प्रतिष्ठा सं. १८८६ में हुई है। इसमें कुल मिलाकर चार देहरासर हैं। ४३ देहरिया हैं मूल मंदिर में श्री अजितनाथ भगवान हैं। यह देहरासर शेठ हेमाभाई वखतचंद खुशालचंद ने बवाया है। इसके सामने श्री पुंडरीकस्वामी का देहरासर

है। एक चौमुखजी भगवान का देहरासर है। उसका निर्माण साकरचंद प्रेमचंद ने करवाया है। उसकी प्रतिष्ठा सं. १८८८ में हुई है। दुसरा चौमुखजी का मंदिर शेठ हेमाभाई ने बनवाया है। उसकी प्रतिष्ठा सं. १८८६ में हुई है। इस टूक में ३२३ प्रतिमाए हैं। इस टूक में मूल मंदिर के उपर एक बडा शिलालेख है। उसकी खिडकी में से निकलने पर एक बडा कुंड आता है। उस कुंड पर खोडियार माता का स्थानक है।

## ( ६ ) श्री नंदीश्वर द्वीप-उजमफई की टूक

अहमदाबाद के प्रसिद्ध नगरशेठ के प्रेमाभाई की बुआ उजमबाई थीं उन्होंने इस टूक का निर्माण करवाया इसलिये इसे उजमई के नाम से जाना जाता है। असंख्यात द्वीप समुद्र में आठवां नंदीश्वर द्वीप है। जिसकी चारों दिशाओं में तेरह इस प्रकार कुल बावन पर्वत हैं। उन पर चौमुखजी प्रतिष्ठित किये गये हैं। इसलिए यहां मध्य में जंबूद्वीप स्थित है। उसके मध्य में मेरु है इसलिये मध्य में मेरु का पर्वत बनाकर उसके उपर प्रभुजी प्रतिष्ठित किये गये हैं। यह मंदिरों चारो और पाषाण की सुंदर मनोहर नक्शीदार जाली है। इस टूक के चारों और कोट है। उसमें श्री कुंथुनाथ भगवान का देहरासर है। श्री कुंथुनाथ भगवान का देहरासर डाह्याभाई शेठ ने बनवाया है। शांतिनाथ भगवान का देहरासर परसनबाई ने बनवाया है। इस टूक में २७४ प्रतिमाएं हैं।

## ( ७ ) प्रेमचंद मोदी की टूक-प्रेमावसही

आगे चलने पर, राजनगर के धनाढ्य व्यापारी मोदी प्रेमचंद लवजी ने सिद्धाचल गिरिराज का संघ निकाला था और बडे वैभव के साथ गिरिराज पधारे थे। यहां पर उन्होने समतल और खाली स्थान देखा और उस स्थान पर टूक का निर्माण करवाने की अभिलाषा उत्पन्न होने पर टूक का निर्माण करवाया। इस कारण इसे मोदी की टूक कहा जाता है। इसमें, देहरासर और ५१ देहरिया हैं। इसका भूतल नीचा है। मूल देहरासर श्री ऋषभदेव भगवान का है। जिसका निर्माण मोदी प्रेमचंद ने करवाया है। इसकी प्रतिष्ठा सं. १८४३ में हुई है। यहां श्री पुंडरीक स्वामी का देहरासर है जिसका निर्माण भी उन्होंने ही करवाया है।

## सुरतवालों का देहरासर

टूक में प्रवेश करने पर एक और सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ का मंदिर है। आरस पत्थर से निर्मित इस मंदिर का निर्माण शेठ रतनचंद झवेरचंद के द्वारा करवाया गया है। इस देहरासर के रंगमंडप में दो गवाक्ष हैं। इन पर की गई नक्काशी वस्तुपाल तेजपाल के द्वारा बनवाये गये आबु के देवरानी-जेठानी के देहरासर की स्मृति करवाती है। गर्भगृह में शेठ-शेठानी की मूर्तियां भी हैं। यहां पर दो गवाक्ष सास--बहु के नाम के हैं। आगे के स्तंभों पर तीन मनोहर बंदनवार हैं।

इस मंदिर के सामने ही सहस्त्रफणा श्री पार्श्वनाथ का मंदिर है। उसका निर्माण सुरतवाले रतनचंदभाई के भाई प्रेमचंद झवेरचंद ने करवाया है। दोनों ही मंदिर में मंत्रमुग्ध करे ऐसी पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं हैं। दोनों मंदिरों पर चौमुखजी महाराज प्रतिष्ठित हैं।

पीछे के भाग में सुरत के वीशानीमा के द्वारा बनवाया गया चंद्रप्रभु का देहरासर है। एक अन्य दूसरा चंद्रप्रभु का मंदिर राधनपुर वाले शेठ लालचंदभाई ने बनवाया है।

छोटे आकार के १४५२ गणधरों के पदचिह्नाकृति भी इस टूक में है। इस टूक में कुल ३ देहरासर ५१ देहरियां हैं, सब मिलाकर ४८० प्रतिमाए हैं।

## माणेकबाई की देहरी

मोदी की टूक से आगे उतरते हुए लगभग ७५ सिढियां उतरने के बाद एक छोटीफ देहरी आती है। उसमे एक मूर्ति है। इस पर एक दंतकथा इसप्रकार है कि माणेकबाई रुष्ट होकर यहां आई थीं। उनकी स्मृति में यह मूर्तिवाली देहरी बनाई गई है। (वास्तव में तो इसका इतिहास अनुपलब्ध है) वहां पास में अदबदजी का देहरासर स्थित है।

## अद्भुत श्री आदिनाथ

यहां एक विशाल खंड है और आगे ढंका हुआ चोक है। खंड में पहाड के पत्थर पर उत्कीर्ण की गई विशालकाय श्री आदीश्वर भगवंत की प्रतिमा है। उसकी उंचाई १८ फूट है। और चौडाई १४॥ फूट है। विशालकाय प्रतिमा होने के

कारण अदबदजी के नाम से जानी जाती है। इस मंदिर और प्रतिमा का निर्माण धर्मदास शेठ ने सं. १६८६ कें करवाया है। इसका शिलालेख उसकी दीवार पर स्थित है। मन को मुग्ध करने वाली यह आश्चर्यजनक सुंदर प्रतिमा है। प्राचीन चैत्यपरिपाटियों में स्वयंभु आदिनाथ और अद्भुत आदिनाथ ऐसे नाम मिलते हैं। वर्ष दौरान एकबार वैशाख मास की वदी - ६ के दिन इस विशाल प्रतिमा का प्रक्षालन, पूजा औश्र अंगरचना होती है। इस मंदिर के अंदर बोलने पर ध्वनि का प्रत्याघात सुनाई देता है। यहां के रंगमंडप में खडे होकर दादा के देहरासर की और देखें तो मन को मुग्ध करने वाली सुंदरता दिखाई देती है।

## (८) बालावसही टूक

अदबदजी की टूक से बाहर निकलने पर कुछ सोपान  उतरने पर बालावसही आती है। इस टूक का निर्माण घोघा बंदर के शेठ दीपचंद कल्याणजी ने लाखों रुपये खर्च कर सं. १८९३ में करवाया था। दीपचंद शेठ का बचपन का नाम बालाभाई था। इस कारण इस टूक को बालाभाई की टूंक अर्थात् बालावसही कहा जाता है। इस टूक में मुख्य आदीश्वर भगवान का मंदिर सं. १८९३में अनेक द्वारा निर्मित करवाया गया है। तथा श्री पुंडरीक स्वामी का देहरासर भी उन्होने ही बनवाया है। सं. १९०८ में मुंबई के शेठ फतेचंद खुशालचंद के द्वारा बनवाया गया चौमुखजी का मंदिर है। उसके सामने कपडवंज के शेठ मीठाभाई गुलालचंद के द्वारा सं. १९१६ में बनवाया गया श्री वासुपूज्यस्वामी का मंदिर है तथा ईलोर के शेठ मानचंद वीरचंद के द्वारा बनवाया गया श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर है। दूसरी और एक पूनावालों के द्वारा बनवाया गया श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर है। इस टूक में २७० पाषाण बिंब है। धातु के ४५८ बिंब है और १३ देहरिया हैं।

## (९) मोतीशा शेठ की टूंक

बालावसही से आगे चलने पर मुंबई के शेठ मोतीचंद अमीचंद के द्वारा बनवाई गई टूंक आती है। मुंबई के शेठ मोतीचंदभाई का क्रय - विक्रय का करोडों का व्यापार चीन, जापान, इंगलेण्ड आदि के साथ चलता था कई जहाज उनके अपने थे। एक बार जहाज चीन की और जा रहा था, उसमें अफीम है इस

बात का संदेह सरकार को हुआ। इसलिये जहाज को पकडने के लिये एक स्टीमलोंच भेजी। इस बात का पता शेठ को चला। तब शेठ ने संकल्प किया कि यदि जहाज बच गये तो, उससे जितनी लाभ की आय होगी वह कुल आय श्री शत्रुंजय तीर्थ पर खर्च कर दूंगा।

पुण्यप्रताप से जहाज बच गया और उससे लाभ की १२ तेरह लाख की धनराशि आयी थी उसे श्री शत्रुंजय पर खर्च करने के हेतु अलग रखी। शेठ उस हेतु से सिद्धगिरिराज पर पधारे, और टूक का निर्माण करवाने हेतु स्थान खोजन लगे। कोई भी स्थान टूक के निर्माण के लिए उपर्युक्त नहीं मिला। परंतु दादा की टूक और चौमुखजी की टूक के बीच में एक बडी खाई जो कि कुंतासर का गडढा कहलाता था, वह दिखाई दिया। इसलिये विचार कि इस खाई को भरवाकर उस पर टंक का निर्माण करवाया जाए। यदि यह खाई भर भी जाये तो एक सुंदर टूक का निर्माण होगा। खाई ईतनी गहरी थी कि उसे देखने से ही चक्कर आने लगे। परंतु शेठ ने उसे भरवाकर ही टूक का निर्माण करने का संकल्प कर लिया।

इसलिए देश परदेश के कई मजदूरों को बुलाया। खनन मुहूर्त किया। उस समय पानी के एक हंडे के लिए चार आने देने पडते थे। बडे परिश्रम और साहस से उस खाई को भरा गया। पश्चात् जब भूमि समतल हुई तब उस पर विमान सद्श सुंदर मंदिर के निर्माण करवाने का मन हुआ। कई लोग कहते हैं कि इस खाई को भरने के लिए ८०००० की तो मात्र रस्सियां लगी थी। इसके बाद मंदिरों के निर्माण का कार्य चला। मंदिरों का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर प्रतिष्ठा का अवसर आया। परन्तु उससे पूर्व ही भावनाशील शेठ सं १८९२ में भाद्रपद सुदी - १ के दिन स्वर्गवासी हो गये।

शेठ के परामर्शानुसार सं. १८९३ में पोष वदी - १ के दिन सुरत से संघ पालीताणा आया। इस संघ में बावन संघवी और सवा लाख जितने यात्रीगण थे। इन सभी का जिम्मेदारी शेठ के मित्र अमरचंद दमणी और कुलचंद कस्तुरचंद के सिर पर थी। वे सभी उत्तरदायित्व वहन कर रहे थे। उत्सव प्रारंभ किया और १८ दिन तक उत्सव चला। ग्राम के द्वार पर अक्षत रखे थे। उस समय एक दिन के

चालीस हजार रुपये खर्च होते थे। यह महोत्सव मोतीशा शेठ के पुत्र खीमाचंदभाई ने किया।

## टूक की रचना

इस मोतीशा टूक की रचना नलिनीगुल्मविमान जैसी लगती है। समूची टूंक के चारों और कोट है। कोट की चारों दिशाओं में चार कोठे हैं। बीच में कई देरासर हैं और कोट की ओट में ही देहरियां बनी हैं।

मध्य में मूल देहरासर श्री आदीश्वर भगवान का है। उसकी प्रतिष्ठा सं. १८९३ में महा वदी - २ के दिन हुई थी। इसके सामने ही उनके द्वारा बनवाया गया श्री पुंडरीक स्वामी का मंदिर है जिसकी प्रतिष्ठा इसके साथ ही हुई है।

शेठ हठीभाई केशरीसिंह अहमदाबाद वालों ने धर्मनाथ भगवान के मंदिर का निर्माण करवाया है। तथा अमरचंद दमणी के द्वारा बनवाया गया धर्मनाथ भगवान का एक अन्य मंदिर भी है। उस मंदिर में गर्भगृह में रत्न के दो स्वस्तिक दीवार पर जडे हुए हैं। ये शेठ के दीवान कहलाते थे। शेठ प्रतापमल जोयता के द्वारा बनवाया गया चौमुखजी का मंदिर है। वे मोतीशा शेठ के मामा थे। अय दुसरा चौमुखजी का मंदिर धोलेरावाला शेठ वीरचंद भायचंद का बनवाया हुआ है, ऋषभदेव भगवान का देहरासर घोघा के पारेख कीकाभाई फूलचंद के द्वारा बनवाया गया है, मांगरोल वाले नानजी चीनजी के द्वारा बनवाया गया चौमुखजी महाराज का मंदिर है। आदीश्वर भगवान का अहमदाबाद वाले गलालभाई के द्वारा बनवाया गया देहरासर है। पाटणवाले शेठ प्रेमचंद रणजीभाई के द्वारा बनवाया गया पद्मप्रभु का देहरासर है। सुरतवाले शेठ ताराचंद नथ्थुजी के द्वारा बनवाया गया पार्श्वनाथ भगवान का देहरासर है। सुरतवाले शेठ खुशालचंद ताराचंद के द्वारा बनवाया गया गणधरों के पगलिये वाला देहरासर हैं। मुंबईवाले शाह जेठालाल नवलशाह के द्वार बनवाया गया सहस्त्रकूट का देहरासर है। संभवनाथ भगवान के देहरासर का निर्माण शेठ करमचंद द्वारा करवाया गया है। शेठ अमीचंद दमणी के वे चाचा थे। सुपार्श्वनाथ भगवान का देहरासर खंभात वाले

पारेख स्वरुप हेमचंद के द्वार बनवाया गया है। पाटणवाले जेचंदभाई पारेख के द्वारा बनवाया गया श्री महावीर प्रभु का देहरासर हे।

इस प्रकार इस टूक में १६ बडे देहरासर हैं उनकी संरचना देखने पर टूक विमान के आकार की मनोहर व सुंदर दिखाई देती है। उसके कोट की ओट में स्थित कुल १२३ छोटी देहरीयाँ हैं। उसकी एक खिडकी में से निकलने पर वहां मुनिराज की मूर्ति दिखाई देती है।

इस प्रकार इस टूक में १६ देहरासर १२३ देहरियां और कुल ३०११ प्रतिमाए स्थित हैं। १४५ धातु की प्रतिमाए हैं। रायण पगले गणधर पगले इत्यादि पगलियों को मिलाकर १४५७ पगलियों की जोडी है। शेठ शेठाणी की मूर्ति रंग मंडप में गवाक्ष में प्रतिष्ठित है।

## गढ की किल्लाबंधी

इसकी थोडी बहुत जानकरी पूर्व में दे दी गई है। परन्तु यहां विस्तार से दे रहे है। दादा की टूक रतनपोल पर पूरा कोट-किल्ला बना है। विमलवसही पर दादा की टूंक से जुडा हुआ कोट है। सगालपोल पर भी कोट है आगे के सभी देहरासरों को समाविष्ट करता हुआ कोट है। साकरवसही का भी कोट है। उजमवसही का भी कोट है। हेमावसही का भी कोट है। मोदी वसही का भी कोट है। बालावसही का भी कोट है। मोतीवसही - मोतीशा की टूंक पर भी कोट है। गिरिराज की समस्त टूंकों को समाहित करता हुआ पूर्ण कोट है। उसमे तीन ही द्वार हैं। बडा द्वार रामपोल का एक और घेटी पण की खिडकी तथा नवटूक की खिडकी ये दोनों खिडकियां देखने योग्य हैं। इस प्रकार समूचे गिरिराज पर स्थिर मंदिरों को समाहित करते हुए कोट के वृत्त की परिक्रमा की जाये तो डेढ गाँऊ जितना क्षेत्रफल होता है। इस कारण इसे डेढ गाँऊ की प्रदक्षिणा कहा जाता है। इसमें कई स्थानों का जीर्णोद्धार के द्वारा नवीनीकरण हुआ है।

(यह संपूर्ण लेखन आचार्य श्री कंचनसागरसूरिजी द्वारा लिखित-संग्रहित 'श्री शत्रुंजय गिरिराज दर्शन' पुस्तक पर आधारित है।)

## सम्मेत शिखरजी महातीर्थ के संदर्भ में
## शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के द्वारा प्रसारित
## प्रेस विज्ञप्ति

झारखंड राज्य में स्थित महातीर्थ श्री सम्मेतशिखरजी पर्वत (पारसनाथ हिल) जैनों के लिए अत्यंत पूजनीय एवं पवित्र है और मूर्तिस्वरुप है।

दिनांक २३-८-२०१८ के दिन आणंदजी कल्याणजी पेढी में से हम झारखंड़ के मुख्यमंत्री श्री रघुबरदासजी से इस पर्वताधिराजकी पूजनीयता और पवित्रता को बरकरार रखने हेतु उचित कदम उठाने के लिए पत्र प्रेषित किया था। हमने आचार्य भगवंतों का अत्यंत सुंदर मार्गदर्शन प्राप्त कर के, एवं समाज के बुजुर्गो के साथ विचार विमर्श कर के दिनांक २२-१०-१८ के दिन पेढी के ट्रस्टी श्री श्रीपालभाई शाह, जैन श्वेतांबर सोसायटी के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया, तथा अन्य ट्रस्टीश्री, जैनसमाज के अग्रणी, भारत सरकार के अल्प संख्यण आयोग के सदस्य श्री सुनीलभाई सिंघी के साथ मुलाकात ली थी।

माननीय मुख्यमंत्री श्री ने इस पर्वताधिराज को पूजनीय एवं पवित्र यात्राधाम स्थल घोषित किया और इस बारे में सरकार ने आदेश भी जारी किया है। इससे जैन समाज में अति हर्ष और उल्लास की भावना फैल गयी है।

हम झारखंड के माननीय मुख्यमंत्री श्री, मुख्य सचिवश्री, और सरकार को शत शत धन्यवाद ज्ञापन पूर्वक सभी के प्रति आभार की भावना व्यक्त करते है। आचार्य भगवंतों को हम वंदना करते है और समग्र समाज की ओर से हमें जो साथ-सहकार मिला उसके लिए सभी का, विशेषरुप से राज्यसभा के सांसद श्री परिमलभाई नथवाणी, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री सुनिलभाई सिंघी, जैन श्वेतांबर सोसायटी के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया एवं अन्य ट्रस्टीगण तथा आणंदजी कल्याणजी पेढी के ट्रस्टीश्री, सभी को धन्यवाद देने के साथ हार्दिक आभार व्यक्त करते है।

श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ का विकास श्री जैन श्वेतांबर सोसायटी एवं आणंदजी कल्याणजी पेढी साथ रहकर करेंगे।

झारखण्ड सरकार
पर्यटन, कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग
फोन– 0651–2400981, फैक्स– 0651–2400982, ई–मेल–govjharkhandtourism@gmail.com, वेबसाईट : www.jharkhandtourism.gov.in

का०ज्ञा०सं० – 1391 / राँची, दिनांक 22.10.2018 /

## कार्यालय ज्ञाप

पारसनाथ सम्मेत शिखर जी पर्वत सदियों से जैन धर्मावलंबियों का विश्व प्रसिद्ध पवित्र एवं पूजनीय तीर्थ स्थल है। इसकी पवित्रता अक्षुण्ण रखने हेतु सरकार प्रतिबद्ध है।

22/x/18

सरकार के अपर सचिव

ज्ञापांक – 1391 / राँची, दिनांक – 22.10.2018 /

प्रतिलिपि : मुख्य सचिव, झारखण्ड/माननीय मुख्यमंत्री झारखण्ड सरकार के प्रधान सचिव/सभी अपर मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव सभी विभाग, झारखण्ड/निदेशक, पर्यटन निदशालय, झारखण्ड, राँची/निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय, झारखण्ड, राँची/उपायुक्त, गिरिडीह को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित।

22/x/18

सरकार के अपर सचिव

## तीर्थ व्यवस्था, सलाह सूचन, दान-सहयोग, जीवदया, पांजरापोल, जीर्णोद्धार वगैरह प्रवृत्तियों के लिए पेढी के संपर्क सूत्र

**शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट**
श्रेष्ठि लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ०२७
फोन : (०७९) २६६४४५०२, २६६४५४३०
समय : सुबह ११ से १-३० व् दोपहर २ से ३-३०
Telefax : 079-266082441 • Email : shree_sangh@yahoo.com

**शेठ आणंदजी कल्याणजी**
१००१, १०वे माल, मेजीस्टीक सोपिंग सेन्टर, ११४, जे.एस.एस. रोड
गीरगाम चर्च के पास गीरगाव, मुंबई-४००००४.
(पैसा जमा करवाने का समय) सुबह ११.०० से १.३० दुपहर मे २.०० से ६.००

**श्री कयवनभाई हेमेन्द्रभाई संघवी**
विश्रुत जेम्स, ७०१-२ ए अमन चेम्बर्स ७वा माला,
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४ फोन : (०२२) ३२९६१८७०
समय : दोपहर १२ से ५

**शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट**
पटनी की खड़की, झवेरीवाड, अहमदाबाद-३८० ००१
समय : सुबह ११ से १-३० व दोपहर २ से ३-३० तक
फोन : (०७९) २५३५६३१९

**शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट**
श्री रजनीशांति मार्ग, पालीताणा-३६४ २७०
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४ Tele : 02848–252148, 253656
समय : सुबह ९ से १२.३० दोपहर २.३० से ७

### और अंत में

आपको 'श्री आनंदकल्याण' का यह अंक अच्छा लगा ? क्या अच्छा लगा ? कुछ पसंद न भी आया हो तो वह भी हमें खुले मन से पर खुरदरी नहीं अपितु नरम कलम से लिख भेजें। हमें अवश्य अच्छा लगेगा। पत्रव्यवहार के लिए ई-मेईल माध्यम इच्छनीय एवं उपयुक्त रहेगा ।
anandkalyanmagazine@gmail.com

॥ दया धर्म का मूल है ॥

# शेठ आणंदजी कल्याणजी छा.पां.सा. ट्रस्ट

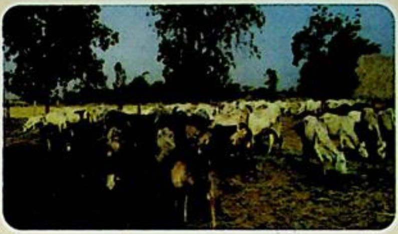

## श्री छापरीयाली पांजरापोल

( स्थापना : वि.सं. १९०८ इस्वी. १८५२ )

अनेक अबोल पशुओं का आश्रयस्थान

---

### जीवदया प्रतिपालक योजना में रु. १०००/-के वार्षिक अनुदान के साथ जुडिये एवं जीवों के पालक बने ।

---

प्रतिदिन केवल २५ रुपये जैसी मामूली राशि का योगदान देकर छापरीयाली पांजरापोल की दैनिक निभाव फंड योजना में लाभ लीजिए एवं रोजाना एक पशु को अपनी ओर से घास-चारा डालने का अमूल्य लाभ प्राप्त करें ।

जीवो के अभयदाता बनिये । दया तमाम धर्मो का मूल है ।
आज ही परिवार के प्रत्येक सदस्य या पूरे परिवार की
ओर सै रु. १०००/- का पांजरापोल को दान कीजिए ।

इस संस्था को दिया गया दान इन्कमटेक्स - कानून के कलम (80G) अंतर्गत करमुक्त है ।
पांजरापोल की किसी भी योजना में लाभ लेने के लिए
आप चेक से राशि पेढीके पते पर भिजवा सकते है. या
STATE BANK OF INDA ( जेसर शाखा ) के सेविंग्स A/C 56022001345
(IFS CODE - SBIN0060022)
जमा करवा कर बेंक स्लिप की नकल पेढी को
भिजवाने से रसीद आप को भेज दी जायेगी ।

---


**शेठ आणंदजी कल्याणजी छा.पां.सा. ट्रस्ट**

मु.पो. छापरीयाली, वाया : जेसर - ३६४५१०, जि. भावनगर

फोनः ( ०२८४४ ) २९०२४५/२९०२४६

श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति

श्री आदिनाथ दादा की ५००वीं सालगिरह

MISSION 500
SUVARNA MAHOTSAV CELEBRATION

संवत २०८७ वैशाख वद-६.
सोमवार दिनांक १२-०५-२०३१

**BOOK - POST**

*To,*



## श्री आनंद कल्याण (त्रिमासिक पत्र)

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन, २५, वसंतकुंज,
नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद - ३८० ००७.
E-mail : anandkalyanmagazine@gmail.com